<u>महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में गंगा तालाब पर आयोजित समारोह के दौरान दिनांक 21 फरवरी 2017 को भारतीय उच्चायुक्त महोदय द्वारा दिए जाने वाले भाषण का प्रारूप</u>

- मॉरिशस **गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय श्री प्रवीण जगन्नाथ जी**
- मॉरिशस **गणराज्य के समस्त माननीय मंत्रीगण, पी.पी.एस, संसद सदस्यगण, लोकप्रतिनिधिगण, उच्च अधिकारीगण**
- **उपस्थित विद्वान एवं पंडितगण**
- **माननीय सोमदत्त दल्थमन जी , अध्यक्ष मॉरिशस सनातन धर्म टेम्पल फेडरेशन**
- **विभिन्न सांस्कृतिक/सामाजिक संगठनों के पदाधिकारीगण**
- **तथा सभा में पधारे विशिष्ट अतिथिगण**
- **व भक्तो, मित्रो, देवियो एवं सज्जनो !**

महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर सबसे पहले आप मेरी, और मेरे देशवासियों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें। महाशिवरात्रि का यह पवित्र पर्व आप सबके जीवन में खुशहाली और समृद्धि की वर्षा करे , ऐसी हमारी मंगल कामना है |

आज अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भी है|इस अवसर पर मैं आप सबको अपनी मतृभाषा हिंदी मे संबोधित करूंगा| इस सन्दर्भ मे मै यह भी कहना चाहूँगा कि पिछले दिसम्बर मे **U.N.E.S.C.O** ने भोजपुरी गीतगवाई और योग, दोनों को एक अमूर्त परंपरा के रूप मे मान्यता दी थी |

यह महत्वपूर्ण निर्णय भारत और मॉरिशस के निकट सहयोग के

कारण ही संभव हो पाया था| आज इस पावन अवसर पर मैं मॉरिशस मैं रहने वाले, भारतीय मूल के , भारत के भिन्न भिन्न भाषाओं को बोलने वाले- हिंदी भाषी, तेलेगु भाषी ,तमिल भाषी, भोजपुरी भाषी, मैथिलि भाषी , मराठी भाषी, बंगला भाषी और

गुजराती भाषी तथा अन्य सभी भारतीय भाषा-भाषी भाई बहनों को मैं विशेष बधाई देता हूँ|

मित्रों! मॉरिशस में आए हुए मुझे बहुत ज्यादा समय नहीं हुआ है,लेकिन इस देश के संस्कार, यहां के रीति रिवाज़,यहाँ की उत्सवधर्मिता और परंपराओं ने मुझे भीतर तक प्रभावित किया है। भारत में मॉरिशस की शिवरात्रि की चर्चा अक्सर होती है ,लेकिन यहाँ आकर जो मैं देख रहा हूँ वो मेरे लिए बहुत ही अभूतपूर्व और अनूठा है । यहां का गंगा तालाब,कावंड़िये ले जाते हुए शिव भक्त और शिव भक्ति में डूबे आप सब।एक शब्द में कहूँ तो सब कुछ शिवमय और अविस्मरणीय ।भगवान् शिव के प्रति गहरी आस्था और शिवरात्रि मनाने का ऐसा उत्साह भारत और मॉरिशस के अलावा विश्व के किसी अन्य देश में देखने को नहीं मिलेगा।

महाशिवरात्रि के इस पावन पर्व पर मैं अपनी कुछ भावनाएं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।शिव अर्थात परम कल्याणकारी ,शुभ और मंगलमय। भारतीय संस्कृति में शिव केवल एक देव का नाम नहीं है,बल्कि हमारी सांस्कृतिक सोच और दार्शनिक चिंतन के वो आधारभूत तत्व हैं जो सही अर्थों में न केवल शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के परिचायक हैं बल्कि सामाजिक समरसता के भी प्रतीक हैं । पौराणिक मान्यताओं के अनुसार शिवरात्रि का यह पर्व प्रकृति और पुरुष के मिलन का प्रतीक है जो सृष्टि के निर्माण और विकास में स्त्री और पुरुष दोनों के पारस्परिक महत्व और समानता को दर्शाता है | धार्मिक ग्रंथों के अनुसार समुद्र मंथन के समय निकले हालाहल विष को मानव जाति के कल्याण के लिए शिव ने अपने कंठ में धारण किया था और विश्व के सामने जन-कल्याण का अनुपम उदाहरण सामने रखा था | मित्रो! शिव के प्रति ये सभी विचारधाराएं प्रतीकात्मक रूप से हमारे समक्ष समस्त मानवता के प्रति कल्याण की भावना को प्रस्तुत करती हैं ।

शिव वास्तव में हैं क्या ? शिव के व्यक्तित्व में ऐसा क्या है ,जो उन्हें सबका प्रिय बनाता है | तो चिंतन करने पर महसूस होता है कि शिव विराट रूप में मानवीय गुणों को साथ लेकर चलने वाली वो सत्ता है ,जो हम सबमें किसी न किसी रूप में और किसी न किसी अंश में विद्यमान है | शिव के अनेक रूप और अर्थ है –

वे एक भावना हैं जो जगत का कल्याण करने में विश्वास रखते हैं , ज्ञान का भण्डार हैं , प्रेमस्वरूप हैं ,एक संकल्प है , वो विभिन्न विरोधावासी प्रवृत्तियों में संतुलन करने वाले हैं , आत्मानुशासन और आत्मनियंत्रण का प्रतीक है ,त्याग और बलिदान तथा मानवता के प्रतीक हैं ,योगी हैं और इन सब गुणों को मिलाकर बनता है इस सृष्टि का जीव तत्व | और हर जीव में ,यानि , मुझमें ,आपमें ,हम सबमें शिव के इन गुणों में से कोई न कोई गुण जरूर विद्यमान है | और इन गुणों को अपने व्यक्तित्व में एकाकार करना ही शिवमय हो जाना है या शिव बन जाना है |

भगवान शिव संसार की नकारात्मक प्रवृत्तियों को भी समान रूप से और सम्मान से स्वीकार करते हैं , उसके बारे में विस्तार से जानते हैं, उसे अच्छी तरह से परखते हैं| इस पूरी प्रक्रिया में यदि उनको कहीं लगता है कि ये तत्व सृष्टि के विकास में अवरोध है ,या हानिकारक है ,तो उसे बदलने के लिए भी पूरा समय देते हैं और इसके बाद भी यदि उस तत्व की नकारात्मकता बनी रहती है तो उस तत्व का वे उचित उपचार करते हैं और यदि उपचार संभव न हो तो विनाश कर देते हैं| यदि हमें वास्तव में अपने समाज को आधुनिक बनाना है, उसका विकास करना है और इक्कीसवीं सदी में प्रगति और विकास के पथ पर आगे बढ़ना है ,तो हमें शिव की तरह ही अपने आसपास के सभी उत्तम विचारों को अपनाने के लिए अपने मस्तिष्क को खुला रखना पड़ेगा साथ ही नकारात्मक प्रवृत्तियों को खुद से और अपने समाज से अलग थलग कर देना पड़ेगा.

मित्रों, महाशिवरात्रि के इस पर्व मैं एक बार फिर भारत सरकार की मॉरिशस नीति के बारे में दो शब्द कहना चाहूँगा| भारत और मॉरिशस ने एक दुसरे को एक विशेष,असाधरण मित्र का दर्जा दिया है| भारत ने OCI कार्ड योजना, दोहरे-कर संबंधित संधि, तथा बड़ी परियोजनाओं के लिए अनुदान योजना में मॉरिशस के लिए अति विशिष्ट प्रावधान और अति विशेष व्यवहार सुनिशचित किया है| आपको यह जान कर सुखद आशचर्या होगा कि पिछले वर्ष दोहरे-कर संधि में संस्शोधन के पशचात भारत में आर्थिक निवेश के परिवहन मार्ग के रूप में मॉरिशस की स्थिती कमज़ोर नहीं, अपितु और सुदृढ़ हुई है| मॉरिशस की सभी बडी परियोजनाओं, मेट्रो

से ले कर पोर्ट तक, के कार्यान्वियन मे दोनों देश एक सुनियोजित सहमति के अनुसार आगे बढ रहे हैं|

मित्रो,दोनों देशों के बीच की प्रगाढ मित्रता तथा हमारा,आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक सहियोग शिव दर्शन पर ही तो आधारित है|हिंद महासागर में शांति और सुरक्षा को हम और अधिक प्रशस्त करने हेतु कटिबद्ध हैं|

दोनों राष्ट्रों के संबंध इतिहास की समस्त कसौटियों पर खरे उतरें, हमारी यह मैत्री, हमारा यह आपसी विश्वास दिन ब दिन गहरा हो, दोनों देशों के संबंधों को नया बल मिले, नई दिशा मिले और दोनों देश प्रगति एवं कल्याण के पथ पर दिनोदिन आगे बढ़ें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। बहुत बहुत आभार।